ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 7 कुल पृष्ठ-8 9 से 15 जनवरी, 2020 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 मा. शु.-13

गुरुकुल गाय और यज्ञ भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं

– स्वामी आर्यवेश

आर्ष शिक्षा से ही वैदिक संस्कृति की रक्षा हो सकती है

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

वेद में विज्ञान सूत्र रूप में विद्यमान है

– डॉ. महावीर मीमांसक

गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोत्साह समारोह पूर्वक सम्पन्न

गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ गत् 16 दिसम्बर, 2019 से प्रारम्भ होकर 5 जनवरी, 2020 को सम्पन्न हो गया। वार्षिकोत्सव की पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. महावीर मीमांसक, राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस., स्वामी श्रद्धानन्द, कै. रुद्रसेन, श्री आनन्द चौहान, श्री योगेश मुंजाल, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक श्री महेन्द्र मोदी, डॉ. सुकामा आचार्या, डॉ. नरदेव यजुर्वेदी, श्री सुरेशपाल अहलावत अमेरिका आदि विशिष्ट विद्वान एवं गणमान्य महानुभाव मंच पर उपस्थित थे।

यज्ञ के ब्रह्मा पद को युवा विद्वान् डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने सुशोभित किया और गुरुकुल के संचालक एवं आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने सभी अतिथियों का अभिवादन किया। मंच का संचालन प्रसिद्ध युवा विद्वान् डॉ. रविन्द्र कुमार एवं गुरुकुल के प्राचार्य श्री प्रियव्रत शास्त्री ने अत्यन्त कुशलता के साथ संभाला। उत्सव की व्यवस्था में श्री रामपाल शास्त्री, आचार्य धनंजय गुरुकुल पौंधा, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री निखिल कुमार रिसर्च स्कालर, श्री भूपेश कुमार शास्त्री, श्री जितेन्द्र पुरुषार्थी, डॉ. अजीत कुमार, आचार्य योगेन्द्र उपाध्याय, आचार्य बुद्धदेव, आचार्य जयकुमार, डॉ. अजय कुमार शास्त्री, डॉ. कंवर सिंह शास्त्री आदि ने विशेष भूमिका निभाई।

21 दिन तक चले इस चतुर्वेद पारायण यज्ञ के दौरान आयोजित महिला सम्मेलन, बलिदान सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन एवं आर्य सम्मेलन आदि में अनेक विद्वानों ने जनता का मार्गदर्शन किया। इस पूरे यज्ञ में यजमान के रूप में गुरुकुल के ट्रस्टी श्री विद्यामित्र ठुकराल ने अपना योगदान दिया। गुरुकुल के प्रधान श्री मामचन्द तंवर की अध्यक्षता में वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। दानी महानुभावों ने गुरुकुल के लिए दिल खोलकर अपना सहयोग प्रदान किया और स्वामी प्रणवानन्द जी को आश्वस्त किया कि वे निश्चिन्त होकर गुरुकुलों

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

'फलित ज्योतिष का ज्ञान वेदविहित न होने से काल्पनिक व त्याज्य है'

–मनमोहन कुमार आर्य

हम वर्षों से देख रहे हैं कि हमारे देश में फलित ज्योतिष की यत्र–तत्र चर्चा होती रहती है और बहुत से लोग फलित ज्योतिष की भविष्य–वाणियों में विश्वास भी रखते हैं। ऐसा होने के कारण ही हमारे देश में फलित ज्योतिष के ग्रन्थों का अध्ययन कर दूसरों का भाग्य बताने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है और यह नाना प्रकार के ग्रहों की स्थिति का उल्लेख कर उनको परामर्श देते रहते हैं। महाभारत युद्ध के बाद ईश्वरीय ज्ञान वेद के सबसे बड़े विद्वान ऋषि दयानन्द सरस्वती हुए हैं। उन्होने विलुप्त व अप्रचलित वेदों का पुनरुद्धार किया और वेदों के सत्य अर्थ भी प्रकाशित व प्रचारित किये। उनकी घोषणा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेद का पढ़ना–पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सब मनुष्यों का परमधर्म है। वह यह भी विधान करते हैं कि जो वेदानुकूल है वही स्वीकार्य है और जो वेदविरुद्ध है वह ईश्वर की आज्ञा व शिक्षाओं के विरुद्ध होने से सर्वथा त्याज्य है। ऋषि दयानन्द गणित व ज्योतिष को तो मानते थे परन्तु फलित ज्योतिष को वेदविरुद्ध, तर्क विरुद्ध एवं मनुष्य जीवन के लिए हानिकारक मानते थे। उन्होंने फलित ज्योतिष को ही मुस्लिम सुल्तानों के हार्थों देश की पराजय का प्रमुख कारण बताया है। सोमनाथ मन्दिर, गुजरात का पराभव भी ज्योतिष और मूर्तिपूजा की मिथ्या कल्पनाओं व आस्थाओं के कारण ही हुआ था। यदि हमारे देश में अवैदिक अर्थात् वेद विरुद्ध मूर्तिपूजा का प्रचलन न हुआ होता तो हम कभी असंगठित न होते और न ही अन्धविश्वासों से युक्त होते जिसका कारण हमारी सोमनाथ मन्दिर की पराजय रही है। दुःख की बात यह है कि हमारी पराजयों तथा जाति के घोर अपमान का कारण होने के बावजूद हम अन्धविश्वासों तथा मिथ्या परम्पराओं को छोड़ नहीं पा रहे हैं। इसके दो प्रमुख कारण प्रतीत होते हैं जिनमें पहला कुछ चालाक व चतुर लोगों का स्वार्थ प्रतीत है और दूसरा भोले–भाले लोगों में अपना भविष्य जानने की प्रवृत्ति सहित उनमें अविद्या के कुसंस्कार हैं। हम स्वयं भी बाल्यकाल में फलित ज्योतिष की बातों पर कुछ कुछ विश्वास करते थे परन्तु पचास वर्ष पूर्व आर्यसमाज के सम्पर्क में आने और सत्यार्थप्रकाश पढ़ने से हमारे फलित ज्योतिष विषयक सभी भ्रम दूर हो गये और हमें यह एक ढ़ोग और पाखण्ड लगता है जिसके सम्पर्क में आकर मनुष्य पुरुषार्थ के प्रति शिथिल व निष्क्रिय होकर भविष्य व जन्म–जन्मान्तर में होने वाली अपनी उन्नति से दूर हो जाता है।

फलित ज्योतिष की सत्यता पर विचार करें तो राम के जीवन की एक घटना सामने आती है। रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक होना था। उस समय के बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों व विद्वानों ने दिन व समय का निश्चय किया था। इसका असफल होना तो हमारे उन वेद के विद्वान ऋषियों की योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है। सत्य तो यह है कि फलित ज्योतिष नाम का कोई विज्ञान व ज्ञान इस सृष्टि में काम नहीं कर रहा है। मनुष्य अपने भविष्य की सभी बातें नहीं जान सकता। हमारे जीवन विषयक कुछ बातें मनुष्य के अपने हाथों में होती हैं और कुछ परमात्मा के हार्थों में। हम अपने पुरुषार्थ से अपना भविष्य संवार सकते हैं। हमने इस जन्म तथा पूर्वजन्मों में जो सत्यासत्य, शुभाशुभ तथा पाप–पुण्य कर्म किये हुए हैं, जो हम भूल चुके हैं परन्तु परमात्मा को सब स्मरण हैं, उनका फल भी हमें भोगना होता है। इसी कारण कई बार पुरुषार्थ करने के बाद भी सफलता नहीं मिलती। इसमें देश, काल और परिस्थितियां भी कारण हुआ करती हैं और हमारा पूर्व का कर्म–संचय अथवा प्रारब्ध भी। शायद इसी कारण गीता के एक श्लोक में कहा गया है कि मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है परन्तु उसके फल की इच्छा करने का नहीं। इसका अर्थ यह है कि हमें वेदविहित सद्कर्म, परोपकार अथवा परहित के अधिकाधिक काम करने चाहियें परन्तु इनको फल की कामना से नहीं करना चाहिये। यदि हम फलों में आसक्त होंगे तो हम इन कर्मों के बन्धन, जो हमें जन्म व मृत्यु के पाश में बांधते हैं, उनसे कभी बच नहीं सकेंगे। कर्म के बन्धनों को काटने के लिये हमें निरासक्त होना होगा। गीता में यही सन्देश दिया गया है। इस शिक्षा व गीता के श्लोक की प्रसिद्धि व स्वीकार्यता को देखते हुए भी हमें सद्कर्मों को करते जाना है और जीवन में आने वाली सफलताओं एवं असफलताओं में विचलित नहीं होना। मनुष्य जब फल की इच्छा से काम करता है तो उसके इन संस्कारों से वह काम व लोभ से ग्रस्त हो जाता है जिससे वह परोपकार एवं परहित सहित देश एवं समाजहित के कामों से दूर होकर सद्कर्मों को पर्याप्त महत्व नहीं दे पाता। यदि सद्कर्म नहीं होगे तो हमारा इस जीवन का भविष्य और परजन्म में सुख प्राप्ति व उन्नति नहीं हो सकती। परजन्म की उन्नति का आधार तो इस जन्म के एकमात्र सद्कर्म ही हुआ करते हैं जिसमें ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र–यज्ञ आदि कर्म सहित हमारे परोपकार की दृष्टि से किये गये सद्कर्म तथा दान आदि होते हैं। अतः मनुष्य को फलित ज्योतिष के कुचक्र में न फंस कर अपना ध्यान अपने कर्तव्यों, पुरुषार्थ एवं वेदविहित अपने नित्य प्रति के कर्मों पर ही केन्द्रित रखना चाहिये। इससे निःसन्देह उन्नति होगी। फलित ज्योतिष और पौराणिक उपायों से यदि हम दुःख निवृत्ति और सुखों की प्राप्ति के लिये प्रवृत्त होंगे तो सम्भावना है कि हम अपना भविष्य व परजन्म बिगाड़ सकते हैं। यह सन्देह हमें वेदादि ऋषियों के शास्त्रीय ग्रन्थों को पढ़ने से मिलता है।

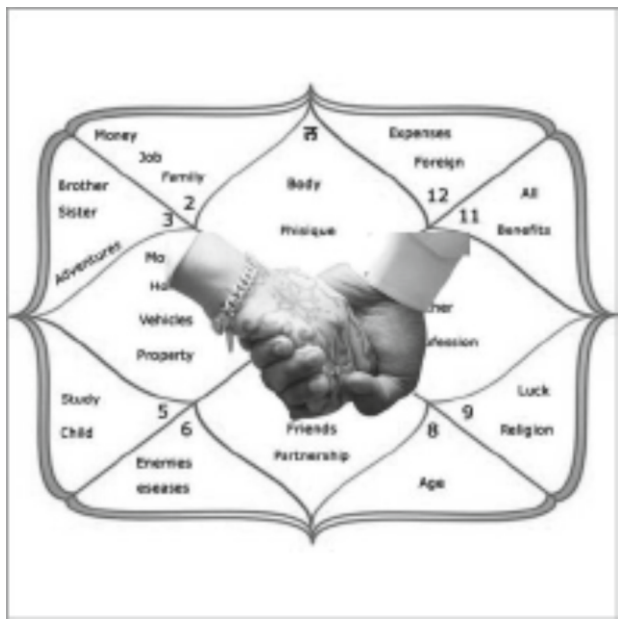

हमारे सुखों तथा दुःख निवृत्ति का सम्बन्ध हमारे सद्कर्मों वा पुरुषार्थ से है। संसार में मनुष्य जन्म लेते हैं, कुछ की बुद्धि कुशाग्र होती है और कुछ मन्द बुद्धि सहित सामान्य बुद्धि वाले भी होते है। पुरुषार्थ के अनुरूप ही हमें शारीरिक बल प्राप्त होने सहित विद्या प्राप्ति में भी सफलता मिलती है। जादू–टोने व टोटकों से तथा फलित ज्योतिष के उपायों से कोई बलवान तथा बुद्धिमान वा विद्यावान नहीं बनता। हमारे ऋषि मुनियों सहित राम, कृष्ण और दयानन्द जी यह सभी गुरुकुलों में उच्च कोटि के विद्वान गुरुओं व ऋषियों से पढ़कर ही महापुरुष बने थे। इसमें इनका प्रारब्ध व उससे प्राप्त बुद्धि भी कारण थी। यदि ऐसा न होता तो एक गुरु से पढ़ने वाले सभी शिष्यों की योग्यता समान होती। इस दृष्टान्त से प्रारब्ध व कर्म फल के सिद्धान्त की पुष्टि करता है। बाल्मीकि रामायण तथा महाभारत का अध्ययन करने पर हमें उस युग में कहीं कोई फलित ज्योतिष का आचार्य दृष्टिगोचर नहीं होता। इससे सिद्ध होता है कि उस युग में फलित ज्योतिष का आरम्भ व प्रचलन नहीं था। यह महाभारत के बाद मध्यकाल के अज्ञान के युग में हुआ जब हमने वेदों को भुलाकर पुराणों की रचनायें कीं और उन अधिकांश वेद विरोधी शिक्षाओं का ही अनुसरण आरम्भ किया। हमारे फलित ज्योतिष के जो ग्रन्थ वराह मिहिर आदि विद्वानों ने रचे हैं, उनमें किसी वेद प्रमाण व उसकी भावना को प्रकट व स्पष्ट नहीं किया गया है। यदि ऐसा होता तो फिर वेदों के सबसे बड़े भक्त ऋषि दयानन्द को फलित ज्योतिष का विरोध न करना पड़ता और सोमनाथ मन्दिर एवं मुस्लिमों से समय–समय पर जो पराजय हुईं, अयोध्या, कृष्ण जन्म भूमि, काशी विश्वनाथ आदि के जो मन्दिर तोड़े गये, वह अपमान करने वाली घटनायें भी न होती। हमारे वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप तथा गुरु गोविन्द सिंह जी आदि इस फलित ज्योतिष के अन्धविश्वासों से बचे रहे, इसी कारण उन्होंने अपने जीवन में सफलतायें पाईं और आज भी उनका यश है और हमें इतिहास में गौरव व स्वाभिमान प्राप्त हुआ है। अतः जीवन में सफलता का आधार फलित ज्योतिष का त्याग कर सद्कर्म सहित पुरुषार्थ को बनाना चाहिये। जीवन में आने वाले दुःखों का उपचार व समाधान हमें विद्वानों की संगति, उनके सुझावों व उपायों को करके निकालना चाहिये। इससे निश्चय ही हमारा जीवन श्रेष्ठ व सुखद होगा तथा जन्म–जन्मान्तर में इन्हीं कार्यों से हमें सुख व शान्ति की उपलब्धि होगी।

हमारे फलित ज्योतिष के आचार्य मनुष्य जीवन विषयक बड़ी बड़ी भविष्य वाणियां करते हैं। यह भविष्यवाणियां शत प्रतिशत सत्य सिद्ध नहीं होतीं। फलित ज्योतिष से हमारे शत्रु देश पाकिस्तान व चीन के षडयन्त्रों का हमें कभी अनुमान नहीं होता। देश के बुद्धिजीवी जानते हैं कि पाकिस्तान आतंकवाद की जननी है और इन्हें यहीं बढ़ावा दिया जाता है परन्तु ज्योतिष इस पर प्रकाश नहीं डालता। एक ही समय में जन्म लेने वाले एक ही व अलग अलग माता–पिताओं के जुड़वा व अन्य बच्चों का भाग्य अलग–अलग होता है। जब नरेन्द्र मोदी जी जन्में होंगे तो उसी दिन व उसी समय के आस पास देश व विश्व में सैकड़ो व हजारों बच्चों व पशु–पक्षियों ने भी जन्म लिया होगा। क्या उन सबका भाग्य समान है? उत्तर है कि नहीं है। यदि मोदी जी चेतना व ज्ञान से रहित जड़ ग्रहों के प्रभाव से प्रधानमंत्री बने हैं और यश अर्जित कर रहे हैं तो उनके जन्म समय में जन्मी सभी आत्माओं की गति, दशा व दिशा एक समान होनी चाहिये थी। ऐसा नहीं है, अतः यह सब ग्रहों के कारण से नहीं अपितु सबके अपने अपने प्रारब्ध और पुरुषार्थ के कारण हैं। हमें इस भेद को समझना है और फलित ज्योतिष को अपने जीवन में किंचित भी स्थान नहीं देना है। हम और हमारा परिवार विगत पचास वर्षों से इस फलित ज्योतिष के चक्र से बाहर है। इस बीच हमें कभी आवश्यकता नहीं हुई कि हम अपनी किसी समस्या के निवारण के लिये इसका सहारा लें। हमारे मित्रों ने कुछ जटिल समस्याओं में इसका सहारा लिया परन्तु उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। हमें अपने बच्चों व युवा पीढ़ी को भी फलित ज्योतिष के मिथ्यात्व सहित प्रारब्ध एवं पुरुषार्थ के महत्व को समझाना चाहिये। इसी से हमारा जीवन सफलताओं को प्राप्त कर उन्नति को प्राप्त होगा। यह जान लें कि सूर्य, चन्द्र आदि गृह व उपग्रह सभी जड़ हैं। इनका प्रभाव सब मनुष्यों पर समान होता है, भिन्न नहीं होता और न हो सकता है। इस चर्चा को यहीं विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

– पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोनः 09412985121

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 93 वाँ बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

20वीं शताब्दी में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी एक मात्र पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा हिन्दुओं के जबरन धर्मान्तरण पर सवाल उठाया व साहसिक कदम उठाते हुए उनकी घर वापसी के लिए शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात किया। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती जी ने काशी आर्य समाज में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द के 93वें बलिदान दिवस के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

स्वामी श्रद्धानन्द का शुद्धि आन्दोलन, संस्कृति और राष्ट्रीय शिक्षा विषयक संगोष्ठी का विषय स्थापन आर्य समाज के मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री जी ने किया।

विशिष्ट वक्ता पूर्व सभासद श्री लीलाराम सचदेवा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विरुद्ध राष्ट्र, संस्कृति और संस्कारों की रक्षा के लिए शिक्षा का राष्ट्रीय प्रारूप दिया।

काशी आर्य विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली की जामा मस्जिद की वेदी से देश के मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने का आह्वान किया था।

काशी आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आजीवन दलितोद्धार तथा नारी सशक्तिकरण के लिए कार्य कर सोशल इंजीनियरिंग को नई दिशा दी।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, श्री रमेश जी आर्य एवं पं. ज्ञान प्रकाश, प्रेम चन्द्र आर्य ने यज्ञ का संयोजन किया। श्री रमेश जी आर्य, विभा आर्य, हेमा आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन श्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री ओम प्रकाश आर्य एवं शांति पाठ श्री बृजभूषण सिंह ने कराया।

– मंत्री, आर्य समाज मार्ग, बुलानाला, वाराणसी–221001

समस्या आने पर ईश्वर से सहयोग लो

– आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य

ईश्वर की उपासना न करने से दो हानियाँ होती हैं। एक तो ईश्वर से जिन विषयों में लाभ उठाना चाहिए, ज्ञान–विज्ञान आना चाहिए, वह प्राप्त नहीं होता है। और व्यक्ति समस्या से ग्रस्त होकर दुःखी होता है। व्यक्ति समस्या से प्रभावित होकर और अधिक अनिष्ट कार्यों को करता है। एक तो समस्या के कारण अनिष्ट हुआ ही है और अनिष्टता के कारण अपने चित्त को अनिष्ट चिन्तन करके और अधिक अनिष्ट कार्यों को करता है। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि समस्याओं के उपस्थित होने पर सर्वप्रथम व्यक्ति यह कार्य करें कि एकान्त स्थान में जाकर, ईश्वर से शक्ति बल, पराक्रम प्राप्त करे। प्रायः ऐसा देखने में आया है कि समस्या के सामने उपस्थित होने पर व्यक्ति विक्षुब्ध हो जाता है, बिल्कुल विवेक खो देता है।

प्रतिकूलताओं के उपस्थित होने पर व्यक्ति को चाहिए कि धैर्यपूर्वक एकान्त स्थान में, मौन और गंभीर हो करके, ईश्वर से गद्‌गद् होकर, प्रेम पूर्वक, श्रद्धान्वित होकर प्रार्थना करें कि – हे परमेश्वर! इस समय मैं संकट की घड़ियों से घिर आया हूँ, मेरे ऊपर अन्याय हो रहा है, झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं, मेरी भर्त्सना की जा रही है, ताड़ना की जा रही है, मेरी निन्दा की जा रही है, मेरे साथ विश्वासघात हुआ है, छल कपट हुआ है, मेरी हानि हुई है। इससे मैं व्यथित हो गया हूँ, दुःखी हो गया हूँ, चंचल हो गया हूँ। हे परमेश्वर! मेरे को शक्ति दो, बल दो, ज्ञान–विज्ञान दो, सामर्थ्य दो, उत्साह दो, पराक्रम दो, ताकि इस प्रतिकूल परिस्थिति के अन्दर मैं अपने चित्त को अच्छे प्रकार से स्थिर बनाये रखूं। आपकी कृपा से इस कठिनाई के दौर को मैं पार कर लूँ, प्रसन्नचित्त बना रहूँ।

व्यक्ति को किसी भी विकट परिस्थिति के उपस्थित हो जाने पर सर्वप्रथम धैर्यपूर्वक शान्त होकर, गंभीर होकर, एकान्त सेवन करना चाहिए। अकेले में आसन लगाकर, आंखे बन्द कर, चित्त की वृत्तियों को रोक कर परमपिता परमात्मा से ज्ञान–विज्ञान मांगना चाहिए, सामर्थ्य मांगना चाहिए, बल, साहस और पराक्रम देने की याचना करनी चाहिए।

यह दोहा सुनने में आया होगा कि ''दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय, जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय।'' लेकिन ये दोहा आजकल नहीं चलता है। आजकल तो व्यक्ति सुख में भी ईश्वर को याद नहीं करता और दुःख में भी याद नहीं करता है। दुःख में थोड़ा बहुत याद करने की लोगों की जो प्रवृत्ति थी, वो भी अब समाप्त हो गई।

दुःख आने पर ईश्वर की उपासना को, यज्ञ को, स्वाध्याय को, आत्मनिरीक्षण को, निदिध्यासन को, आत्मचिन्तन को, व्यक्ति नहीं करता है। उस समस्या का समाधान करने के लिए अनेक प्रकार के साधनों को संग्रहित करने की अनिच्छा हो जाती है। समस्या से पीड़ित व्यक्ति केवल रोता है, चिल्लाता है, दुःखी होता है और पागल बन जाता है।

वस्तुतः होना ये चाहिए कि चाहे हम कहीं पर भी हों, घर में हों, मकान में हों, बाहर सड़क पर हों, बाहर कार्यालय में हों, फैक्ट्री में हों, बस में हों, ट्रेन में हों, प्लेन में हों, भीड़ में हों, किसी भी प्रकार की विकट प्रतिकूल परिस्थिति सामने उत्पन्न होने पर एक तो तत्काल चुप हो जायें, शान्त हो जायें, गम्भीर हो जायें और दूसरा कार्य प्रार्थना करें। हम परमपिता परमात्मा से तत्काल प्रार्थना करें कि हे परमेश्वर! हमको इस विकट परिस्थिति का सामना करने के लिए शक्ति दो, बल दो, पराक्रम दो, मुझमें उत्साह प्रदान करो, मैं हताश–निराश न होऊँ, दुःखी न होऊँ, पागल न होऊँ, मैं अपना और परायों का अनिष्ट न करूँ। एकान्त में जाकर तत्काल बारम्बार ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रार्थना करने में हमें दो प्रकार के लाभ होते हैं। पहला लाभ ये है कि वह जो समस्या है, उसको व्यक्ति भूल जाता है, उससे मन हटता है। दूसरा लाभ यह है कि ईश्वर की उपासना करने से ईश्वर से बल मिलता है, ज्ञान मिलता है, आनन्द मिलता है, उत्साह मिलता है और पराक्रम मिलता है।

ईश्वर की उपासना न करने से दो हानियाँ होती हैं। एक तो ईश्वर से जिन विषयों में लाभ उठाना चाहिए, ज्ञान–विज्ञान आना चाहिए, वह प्राप्त नहीं होता है। और व्यक्ति समस्या से ग्रस्त होकर दुःखी होता है। व्यक्ति समस्या से प्रभावित होकर और अधिक अनिष्ट कार्यों को करता है। एक तो समस्या के कारण अनिष्ट हुआ ही है और अनिष्टता के कारण अपने चित्त को अनिष्ट चिन्तन करके और अधिक अनिष्ट कार्यों को करता है। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि समस्याओं के उपस्थित होने पर सर्वप्रथम व्यक्ति यह कार्य करें कि एकान्त स्थान में जाकर, ईश्वर से शक्ति बल, पराक्रम प्राप्त करे। प्रायः ऐसा देखने में आया है कि समस्या के सामने उपस्थित होने पर व्यक्ति विक्षुब्ध हो जाता है, बिल्कुल विवेक खो देता है।

होता ये है कि महत्त्वपूर्ण बातों को जब याद रखने की आवश्यकता पड़ती है, उस समय व्यक्ति भूल जाता है। वो कथा सुनी होगी आपने। एक व्यक्ति ने कबूतरों को सलाह दी कि बहेलिया आता है आपको पकड़ लेता है। आप मेरे से पाठ पढ़ लो। याद रखना बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाना डालेगा और फंसना नहीं। व्यक्ति ने पूछा सीख लिया। कबूतरों ने कहा – हाँ सीख लिया। कुछ दिनों बाद बहेलिया आया और वे बोलते गये दाना खाते गए और बोलते–बोलते उसके जाल में फँस गये।

आज का व्यक्ति तो यह भी नहीं बोलता है। उसके ऊपर आपत्ति आती है, कठिनाई आती है, समस्या आती है, प्रतिकूलता आती है, तो उस समय ईश्वर को याद करना ही भूल जाता है, बिल्कुल पागल बन जाता है, एकदम नास्तिक बन जाता है। जो व्यक्ति आँख बन्द कर ध्यान में आधा घंटा, एक घंटा बैठता था, कठिनाई आने पर तो उसको बिल्कुल ही भूल जाता है। कहता है – नहीं, अब मेरे से संन्ध्या होगी नहीं, उपासना होगी ही नहीं निदिध्यासन होगा ही नहीं। बिल्कुल उल्टी परिस्थिति बन जाती है। जब ईश्वर को अधिक मात्रा में याद करना चाहिए, उस समय बिल्कुल याद नहीं करता। होना यह चाहिए कि प्रतिकूल परिस्थितियों में, समस्याओं के उपस्थित होने पर, अभाव होने पर, अन्याय होने पर, व्यक्ति को ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।

किसी विद्यार्थी को जब मैं दण्ड देता हूँ, ताड़ना करता हूँ, भर्त्सना करता हूँ और फिर उनके हाव–भाव को, चाल को और आँखों को देखता हूँ, तब मुझे प्रतीति हो जाती है कि इसमें सहनशक्ति, धैर्य है या नहीं। चाहे घोर अन्याय हो रहा है, चाहे संशय किया जा रहा है और व्यक्ति दोषी नहीं है, उसने त्रुटि नहीं की है, उसने भूल नहीं की है, फिर भी उस समय आध्यात्मिक आदमी को सर्तक व सावधान होकर अपनी स्थिति को नहीं खोना चाहिए। अपितु ये कहना चाहिए आज मेरी परीक्षा है। इस समय मुझ पर नितांत झूठा आरेप लगाया जा रहा है, गलत संशय किया जा रहा है, मेरी भर्त्सना की जा रही है, ताड़ना की जा रही है दंड दिया जा रहा है, इत्यादि। लेकिन मैं इस समय प्रसन्न रहूँगा, खुश रहूँगा, दुःखी नहीं होऊँगा। ये परीक्षा है मेरी, जिसमें मुझे पास होना है। जो व्यक्ति इन प्रतिकूल परिस्थितियों की परीक्षा में पास हो जाता है, वो दुनियाँ में कभी घबराता ही नहीं।

महान आदमी वही है, जो अपने सामने आने वाली बड़ी से बड़ी, पहाड़ के समान समस्याओं को सहन कर लेता है। मैं विद्यार्थियों को सामर्थ्य बनाने का प्रयास करता हूँ। मेरे मन में आशंका रहती है कि कहीं यह विद्यालय से भाग न जायें, दुःखी न हो जायें, कहीं ये मेरे प्रति श्रद्धा को समाप्त न कर दें, मेरे प्रति वितर्क न उठा लें। घाव के ऊपर टिन्चर आयोडीन लगती है तो व्यक्ति कष्ट से चरमराता है। किसी गुरु को अपने शिष्य को ताड़ना करने में मजा नहीं आता है। लेकिन शिष्यों के कल्याण के लिए, सुधार के लिए, सहनशक्ति बढ़ाने के लिए गुरु ऐसा करते हैं। गुरु की ताड़ना को, भर्त्सना को, कोप को, अन्यथा नहीं लेना चाहिए। विद्यार्थयों की भूल को मैं प्रेमपूर्वक भी बता सकता हूँ। परन्तु विद्यार्थियों का सामर्थ्य बढ़ाने के लिए, परीक्षा लेने के लिए मैं जानबूझकर अनेक बार ये प्रयोग करता हूँ।

वही व्यक्ति श्रेष्ठ है, वही महान् है, वही योगी है, वही बुद्धिमान है, वही धार्मिक है, वही आस्तिक है, जो कठोरतम परीक्षाओं को पार कर लेता है और विचलित नहीं होता है। यह देखने में आता है कि प्रायः व्यक्ति छोटी–छोटी प्रतिकूलताओं से बाधित होकर और तत्काल अपने स्तर को खोकर, अपने स्तर को गिराकर अपना और अन्यों का भयंकर अनिष्ट कर लेते हैं और अपने बहुमूल्य जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं।

आपको देखने को मिलेगा कि व्यक्ति की इज्जत, व्यक्ति की प्रतिष्ठा, व्यक्ति का विश्वास, व्यक्ति के प्रति निष्ठा, व्यक्ति के प्रति श्रद्धा, वर्षों में बनती है। हम किसी एक वयिक्त से बार–बार विनम्रता से निवेदन करेंगे, उसकी सेवा करेंगे, दान देंगे, उसके कष्टों को सहन करेंगे, प्रतिकूलताओं को सहन करते–करते, दो–तीन–दस बीस वर्षों में उसके मन में हमारे प्रति श्रद्धा बनती है कि ये व्यक्ति बिल्कुल ठीक है। जो मूर्ख आदमी होता है, असहनशील व्यक्ति होता है, वह बीस साल में अपने प्रति बनाई गई श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास और प्रेम को गलत वाक्यों का उच्चारण कर, अनुचित प्रतिक्रियाएँ कर, अनिष्ट चिन्तन कर, दुष्कृत्यों को कर, दो मिनट के अन्दर नष्ट भ्रष्ट कर देता है।

पति–पत्नी का सम्बन्ध होता है। कभी पति गिरता है, कभी पत्नी गिरती है। कभी पत्नी गिरती है तो पति को सम्भालना चाहिए, धैर्य बनाये रखना चाहिए। यदि पति गिरता है तो पत्नी को यह कार्य करना चाहिए। भाई–भाई के विषय में, बाप बेटे के विषय में, सास–बहू के विषय में, गुरु–शिष्य के विषय में भी इसी प्रकार का नियम लागू होता है। हम सब भूलें करते हैं, त्रुटियाँ करते हैं। आप भी गलत कार्य करते हैं, मैं कभी–कभी भूलवश गलत कार्य कर बैठता हूँ। जैसे आदर्श गुरु शिष्य को सहन करता है, उसी प्रकार शिष्य में भी सहन करने का सामर्थ्य होना चाहिए। विद्यार्थी को तो विशेषकर सहन करना चाहिए। क्योंकि विद्या अध्ययन का काल निर्माण का काल है।

प्रतिकूल परिस्थितियों में कठिनाईयाँ व समस्यायें उपस्थित होने पर व्यक्ति को, एकान्त स्थान में बैठकर, आँखे बन्द कर समस्त विषयों से मन को हटाकर परमपिता परमात्मा में प्रार्थना करनी चाहिए। ये बहुत बड़ा समाधान है। ये काम कभी भी हो सकता है। खड़े–खड़े हो सकता है, बाजार में हो सकता है, सभा में हो सकता है। एक मिनट के लिए शान्त हुए और व्यक्ति को ईश्वर शक्ति दे देता है, साहस, बल, बराक्रम देता है। बस एक मिनट की बात है। इस एक मिनट में व्यक्ति का अनिष्ट हो जाता है और एक मिनट में इष्ट भी हो जाता है।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल वेद विद्यालय गौतमनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोत्साह समारोह पूर्वक सम्पन्न

का संचालन करें, अर्थाभाव हम नहीं होने देंगे।

इस अवसर पर कन्या गुरुकुल रुड़की, रोहतक, हरियाणा की आचार्या डॉ. सुकामा, पुरातत्त्व संग्रहालय गुरुकुल झज्जर के संचालक आचार्य विरजानन्द देवकरणी तथा भगवानदास संस्कृत कॉलेज हरिद्वार के प्रो. डॉ. रविन्द्र कुमार का प्रशस्ति पत्र एवं सम्मानित राशि देकर अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. आनन्द कुमार व श्री आनन्द चौहान ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में गुरुकुल, गाय व यज्ञ को वैदिक संस्कृति का आधार बताते हुए कहा कि अब वह समय आ गया है कि आर्य समाज को गोरक्षा महा अभियान के माध्यम से भारत में हो रहे गोवंश के विनाश को रोकना होगा। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्णय लिया है कि देश की गोप्रेमी जनता के सहयोग से प्रचण्ड गोरक्षा आन्दोलन शुरू किया जायेगा जिसके माध्यम से जहाँ सरकार को गोहत्या एवं गोमांस के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए विवश किया जायेगा वहीं जनता को गो पालने तथा गोवंश की वृद्धि करने के लिए प्रेरित किया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि इसके लिए पूरे देश में गोरक्षा महा अभियान के नाम से ग्राम स्तर तक संगठन बनाया जायेगा और जन–चेतना यात्राओं, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा धरने व प्रदर्शनों के द्वारा पूरे देश को जागृत किया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि गोरक्षा महा अभियान के अन्तर्गत गाय के साथ–साथ अन्य पशुओं की रक्षा, किसानों के हितों के लिए संघर्ष तथा नशाखोरी जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आवाज उठाई जायेगी।

स्वामी आर्यवेश जी ने और अधिक गुरुकुल खोलने तथा गुरुकुलों को विशेष सहयोग देकर सशक्त बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों से ही संस्कृत और संस्कृत से संस्कृति की रक्षा होगी। भारतीय जनमानस में यज्ञ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव है अतः यज्ञ को भी व्यापक रूप से प्रचारित एवं प्रसारित करने की आवश्यकता है ताकि भारी संख्या में देश के लोग एक झण्डे के नीचे संगठित हो सकें। गुरुकुल के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने यज्ञ में उपस्थित सभी यजमानों एवं यज्ञप्रेमी लोगों को आशीर्वाद दिया तथा उनका धन्यवाद ज्ञापित करके आभार जताया। इस पूरे 21 दिन के कार्यक्रम को लाखों

लोगों तक पहुँचाने तथा प्रचारित प्रसारित करने में मिशन आर्यावर्त यू–ट्यूब चैनल की पूरी टीम ने विशेष पुरुषार्थ एवं प्रयत्न किया। इसमें मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र के नेतृत्व में श्री वीरेन्द्र आर्य तथा अन्य कार्यकर्ताओं ने विशेष रुचि लेकर कार्य किया। विदित हो कि गुरुकुल गौतमनगर की लगभग 8 शाखाएँ देश के विभिन्न भागों में चल रही हैं जिनमें हजारों छात्र–छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ और प्रीति भोज का सभी ने आनन्द लिया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, जिला–हिसार (हरियाणा) एवं रविन्द्र योग संस्थान आर्य नगर, हिसार के संयुक्त तत्वावधान में

राष्ट्ररक्षा एवं महिला उत्थान सम्मेलन का आयोजन किया गया

सभी युवा गोरक्षा महा अभियान की तैयारी में जुट जायें

– स्वामी आर्यवेश

फरवरी, 2020 में हिसार में होगा विशाल गोरक्षा सम्मेलन

– चौ. हरि सिंह सैनी

बेटियों के सम्मान से देश का स्वाभिमान बढ़ेगा

– बहन पूनम आर्या

हिसार जिले के गाँव आर्य नगर में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हिसार व रवींद्र योग संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन व महिला उत्थान सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज हिसार के प्रधान चौ. हरिसिंह सैनी ने की। मुख्य वक्ता आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे। कार्यक्रम में विशेष रूप से बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, अखिल भारतीय जाट महासभा की प्रदेशाध्यक्ष सविता मान, रामसिंह लोहचब, डीडीपीओ, भूपेंद्र गंगवा, रणधीर पनिहार, डॉ. पवन कुमार, आकाशवाणी हिसार, देवेंद्र सैनी, सज्जन राठी कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष परिषद, सतपाल अग्रवाल, शशि आर्या, प्रो.पल्लवी आर्या ने संबोधित किया। कार्यक्रम से पूर्व सैंकड़ो लोगों ने यज्ञ में आहुति डालकर संकल्प लिया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कलकत्ता में आयोजित कार्यक्रम में गौरक्षा महाअभियान शुरू करने की घोषणा की है। जिसका शुभारंभ हरियाणा से फरवरी में स्वामी दयानंद जी के जन्म दिवस पर शुरू किया जाएगा। इसमें गौरक्षा, किसान रक्षा, कन्या रक्षा, युवा रक्षा आदि के मुद्दे शामिल किए गए हैं। उन्होंने कहा कि गाय को हम माता कहते हैं और इतनी पवित्र उपाधि उसको ऐसे ही नहीं दे दी गई है। माँ के उपरान्त गाय ही हम सबको पालती है। आज देश में गाय की जितनी उपेक्षा हो रही है उतनी कभी भी नहीं हुई। दिन–प्रतिदिन लाखों गायें अपनी जिह्वा के स्वाद को शान्त करने के लिए निर्ममता से काट दी जाती हैं और हम कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि जिस देश की अर्थव्यवस्था पशुपालन पर निर्भर हो और जिसके संविधान और धर्म में गौरक्षण की जिम्मेदारी मुख्यतया सरकार पर निर्भर हो उस देश में गोहत्या की स्थिति यदि यही बनी रही तो आने वाले कुछ समय में गाय एक दुर्लभ प्राणी के रूप में याद की जायेगी। उन्होंने कहा केवल भारत या भारतीय संस्कृति में ही नहीं वरन भारत के अलावा अन्य सभी धर्म एवं संस्कृति में गाय का विशेष महत्त्व है। गाय में क्षमता है कि वह एक व्यक्ति से लेकर पूरे राष्ट्र एवं विश्व को पुष्ट कर हित प्रदान करने में समर्थ है। स्वामी जी ने कहा कि अब समय आ गया है कि गाय की हत्या को रोकने और गोमांस का निर्यात बन्द करने के लिए हम सब एकजुट होकर गोरक्षा महा अभियान में जुट जायें। स्वामी जी ने सभी आर्यों से और विशेष रूप से युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि गोरक्षा महा अभियान का शुभारम्भ महर्षि दयानन्द जी के जन्मदिवस से प्रारम्भ किया जा रहा है और आप सबसे मैं अपील करता हूँ कि गाय को बचाने के लिए आप सब तन–मन–धन से सहयोग कर इस अभियान को सफल बनायें। इसके अतिरिक्त गाँव स्तर पर गऊ रक्षा समिति बनाने के लिए जुट जायें और सभी को इस गम्भीर समस्या से अवगत कराने का

शेष पृष्ठ 8 पर

मकर संक्रान्ति महोत्सव – त्रिसूत्रीय महापर्व

– चमनलाल

भारतवर्ष त्यौहारों, पर्वों का एक अनन्त समुद्र है, जिसमें अनेक मंगलमय पर्वों, त्योहारों की नदियों का पावन संगम निरन्तर होता रहता हैं इन्हीं पर्वों में हमारे विशाल देश की महानता, इन्द्र धनुषी आभा और अखण्डता परिलक्षित होती है। कहां तक गिनाएं जितने अधिक त्योहार हमारे देश में मनाएं जाते हैं, शायद ही विश्व के किसी और देश में मनाए जाते हों। सच तो यह है कि ये पर्व ही हमारी प्राचीन संस्कृति की समृद्धि को उजागर करते हैं। शताब्दियों से व्यक्ति समाज और राष्ट्र का जीवन इन्हीं से प्रेरित होते रहे हैं। हमारे सभी त्योहार महापुरुषों के जन्म निधन, उनके उदात्त विशद जीवन की प्रेरणादायक घटनाओं से जुड़े हैं और साथ ही जुड़े हैं प्रकृति की सुन्दर महामाया से। अतः ये पर्व हमारी संस्कृति के पिरचायक हैं, दर्पण हैं और इसीलिए हमारे जीवन का अंग भी हैं।

इन्हीं त्योहारों की शृंखला में एक स्मरणातीत काल से चले आ रहा महत्वपूर्ण त्योहार 'मकर संक्रांति' भी है। इस त्योहार की एक विशेषता यह है कि यह प्राचीनतम होते हुए भी अन्य त्योहारों की न्याई किसी जाति, वर्ग, देश, महापुरुष विशेष से सम्बन्धित नहीं है और इसीलिए यह काल की सीमाओं से भी बंधा नहीं है। यह प्राकृतिक ऋतुपर्व प्राचीनतम त्योहार है जो सृष्टि के आरम्भ से ही मानव जाति से जुड़ा है।

आयुर्वेद के अनुसार प्रकृति संरचना को व धातुओं के गुण दोषों को ध्यान में रखकर 6 ऋतुएं स्वीकार की गई हैं। जिन्हें सामवेद मन्त्र616 में इस प्रकार वर्णन किया गया है :-

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।

वर्षायण्नु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।।

इन्हीं 6 ऋतुओं- वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर को यजुर्वेद (22/31) में चान्द्र वर्ष गणना के अनुसार दो-दो आददियो अथवा दो-दो मास के जोड़ों को मधु-माधव, शुक्र-शुचि, नभ-नभस्यः, ईष-ऊर्जा, सह-सहस्य, तप-तपस्या कहा गया है।

'मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा, शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभते स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोजार्य स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऊँ हसस्पतये स्वाहा।'

आयुर्वेद ने चन्द्रमा एवं सूर्य के काल, विभाग करने के गुण के कारण दक्षिणऔर उत्तर दो अयन माने हैं। दक्षिणायन में वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुएं होती हैं। इसको ही विसर्ग काल कहते हैं।

इस काल में चन्द्रमा का प्रकाश अधिक और सूर्य का क्षीण होता है।इससे पृथ्वी और प्राणियों का रस पुष्ट होने से बल बढ़ता है। उत्तरायण में शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म ऋतुएं आती हैं। इसे आदान काल कहते हैं। इस समय सूर्य का बल तेज होता है और सूर्य की प्रखर किरणें पृथ्वी से जलीय अंश को सुखा देती है। आयुर्वेद के अनुसार शीत ऋतु विसर्ग के काल एवं आदान काल को सन्धि वाली ऋतु माना जाता है। मकर संक्रान्ति का पर्व इसी ऋतु में आता है जो प्रायः प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। इस समय शीत ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर होती है। अतः इस पर्व के अवसर पर शीत निवारण के ही उपायों का प्रयोग किया जाता है। अधिक शीत होने के कारण शरीर के अन्दर सेनिकलने वाली गर्मी बाहर निकलने में असमर्थ हो जाती है, जिसके फलस्वरूप जठराग्नि (पाचक शक्ति) बहुत तेज हो जाती है। इसलिए इस समय पौष्टिक आहार करने से शरीर पुष्ट होता है। यदि पौष्टिक स्निग्ध, गरिष्ठ भोजन न किया जावे तो जिस तरह से बर्तन भट्ठी पर चढ़ा होने से गर्म हो जलने लगता है, उसी तरह शरीर भी क्षीण होने लगता है। इसीलिए शरीर रक्षा के लिए तिल आदि गर्म प्रकृति के पदार्थों के नाना प्रकार के व्यंजनों का प्रयोग करते और खिचड़ी आदि का कुछ अधिक प्रयोग इस मौसम में किया जाता है। और इसी तरह गर्म वस्त्रों का प्रयोग करके शरीर रक्षा की जाती हैं। समृद्ध लोग दान की भावना और मनुष्यता के नाते अभावग्रस्त और साधनहीन लोगों की सर्दी की पीड़ा को दूर करने के निमित्त यही गर्म खाद्य पदार्थ और कम्बल, स्वेटर लिहाफ आदि बांटते हैं।

उत्पत्ति- यह सृष्टि भगवान की बड़ी अद्भुत रचना है और प्रभु के कौशल्य का प्रतीक है। मकर संक्रांति की उत्पत्ति पृथ्वी और सूर्य की नैसर्गिक गति और उस महाकर्ता के अभेद विधान में बंधकर चलने के कारण हुई है। पृथ्वी जो आठ हजार मील मोटी और चौबीस हजार मील परिधि वाली है, अपनी कीली पर भ्रमण करके चौबीस घण्टे में दिन और रात बनाती है। यही पृथ्वी जब सूर्य के गिर्द (सूर्य पृथ्वीसे तेरह लाख गुना बड़ा है) घूमती है, तो चक्र पूरा करने में 365 दिन और कुछ घण्टे लगाती है, इसे एक सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी जिस परिधि पर सूर्य के गिर्द परिभ्रमण करती है, उस क्रांति वृत को 12 भागों में कल्पित कियागया है। उन 12 भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र मिलती-जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिये गये हैं- मेष, वृष, मिथुन, मीन आदि। यही 12 राशियाँ हैं। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी में संक्रमण करती है तो उसे संक्रांति कहते हैं इस प्रकार प्रतिमास संक्रांति आती है परन्तु मकर संक्रान्ति का महत्व अत्यधिक इसलिए है कि इस समय सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करने लगता है। उत्तर की ओर गति उन्नति और अभ्युदय का द्योतक है। इस समय प्रकाश बढ़ता जाता है और अन्धेरा कम होने लगता है या यूं कहिये कि दिन बढ़ने और रात घटने लगती है। यह सब इस कारण होता है कि सूर्य 6 मास दक्षिण से निकलता दिखाई देता है जिसे दक्षिणायन कहते हैं इसमें तीन मौसम वर्षा, सर्दी, हेमन्त होता है और यही सूर्य 6 मास उत्तर की ओर से उगता दिखाई पड़ता है जिसे उत्तरायण कहते हैं, इसमें तीन ऋतुएं शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म होता है।

मकर संक्रान्ति के तीन रूप

यह महत्वपूर्ण पर्व तीन रूपों में (अध्यात्मिक, आधिभौतिक और सामाजिक) मनाया जाना चाहिए अतः इसे तीन सूत्री पर्व कहना भी अनुचित न होगा।

(क) आध्यात्मिक :- ''देवस्य पश्य काव्यम् न ममार न जीर्यति।'' अथर्व 10-8-32

भगवान की इस काव्यमय सृष्टि रचना के अद्भुत कौशल को देखकर उसकी सत्ता में विश्वास करके, उसका बार-बार धन्यवाद देना चाहिए कि किस प्रकार प्रभु के विधि-विधान में बंधे ये पृथ्वी, सूर्य आदि जड़ पदार्थ इस समय अन्धकार और शीत से मुक्त करा प्रकाश और सुन्दर बसन्त ऋतु की ओर ले जाते हैं।

(ख) आधिभौतिक :- ''सर्व अन्यत् त्यजेत् शरीरमनुपातयेत् अनमीदा स्व क्षेत्रे विराज।''

इस समय अत्यधिक शीत होने के कारण हमें इस भगवान द्वारा दिये गये उत्तम शरीर की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिए। अपने आहार व्यवहार का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यही योनि भगवान को प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। और इसीलिए वेद में इसे 'देवानां प्रियतम' कहागया है, इसके स्वस्थ रहने पर हम सब धर्म परहित कार्यों को कर सकते हैं।

''शरीरमाधम् खलु धर्म साधनम्।''

(ग) सामाजिक '- ''पक्षेभिरपि कक्षेभिः संरभामहे।'' ऋ. 10-134-7

अर्थात् हमें चाहिए कि अभावग्रस्त साधनहीन लोगों को साथ लेकर चलें। इस शीत काल में जहाँ हम सम्पन्न लोग गर्म, पौष्टिक पदार्थों का सेवन करके अपने शरीर की रक्षा करते हैं ठीक इसी प्रकार दान रूप में जरूरतमंद को गर्म वस्त्र, स्वेटर, कम्बल, लिहाफ आदि देकर और तिल, गुड़ आदि के बने व्यंजन इन अभावग्रस्त लोगों को देकर इनकी रक्षा करने का यत्न करें।

मकर संक्रान्ति के पहले लोहड़ी नाम का त्योहार मनाने की रीति भी हमारे देश में प्रचलित हैं। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होली के समान अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है और इसमें गन्ने को तपाकर, इन्हें भूमि पर पटका कर आनन्द मनाया जाता है। यह भी मकर संक्रान्ति का एक अपभ्रंष रूप है। मकर संक्रान्ति को माघी भी कहते हैं, क्योंकि उसी दिन से माघ मास आरम्भ हो जाता है।

अतः हमें त्योहारों को बड़ी श्रद्धा, निष्ठा और उत्साह से मनाने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि ये मृत प्राय जाति को भी नव जीवन का संचार करने की शक्ति रखते हैं, आज हमें इसकी अत्यन्त आवश्यकता भी है।

- एच-64, अशोक विहार, दिल्ली-52

Vedic Concept of Creation

The theory of evolution is one of the greatest revelations of modern scientific thought. Various philosophers, physicists and scientific men, working independently of one another and in different domains of Nature, have, established the truth of this theory, so that instead of remaining a theory, there are evident signs of its soon becoming a proven fact. The theory enunciates the great truth, that all complexity came out of simplicity heterogeneity out of homogeneity, perfection out of imperfection, variety out of uniformity. All this beauty and grandeur with apparent paradoxes is the result of the struggle which Nature wages towards the attainment of order and perfection.

In the beginning of the present order of things, in some far-off period, in some distant point of time, the whole universe existed in a state of paramanu (atoms), invisible, subtle and unmanifested. That which we know as the earth, the sun, the moon and the stars was then, in the beginning of the kalpa, but formless matter in its most elemental and attenuated condition- ether, no doubt our ancient Aryan philosophers called it-non-being (asat). We involuntarily exclaim with our glorious Rishis:- "Before, O Child, this was a mere state of non-being (asat), one only, without a second. Thereof verily others say: Before this was non-being, one alone, without a second, from that non-being proceeds the state of being."

There is nothing, therefore, inappropriate in the name which the ancients gave this ether-spirit, viz., the anima mundi-the divine inflatus, the Hiranyagarbha. The Aryan title Hiranyagarbha-the womb of light-is far more expressive and scientific than the name ether.

The Evolution of Heat and Light

In the beginning, there was neither nought nor aught.
Then there was neither sky nor atmosphere above.
What then enshrouded all this universe?
In the receptacle of what was it contained?
Then was there neither death nor immortality,
Then was neither day, nor night, nor light, nor darkness,

Only the Existent One breathed calmly, self-contained. (Rig. 10.121.1)

First in the beginning, therefore, was this Hiranyagarbha, one only without a second. The next step towards evolution was the generation of heat. The atoms of ether came closer together and united in different proportions and formed molecules. Thus the various elements were first evolved out of the homogeneous atoms of ether. This union and contraction, gave rise to a great deal of heat.

This intense heat raised the elements to a state of gaseous incandescence, and the whole mass would be now a luminous vapour of all elements, iron, gold etc. This self-luminous vapour has been called by the Aryan Rishis Prajapati (the Lord of all creations) and modern scientists have called such incandescent vapours nebulae (clouds), from their resemblance to white clouds. Thus, there arose light where there was formerly only darkness.

The findings of astrophysicists of today have now reaffirmed the statements of the Vedic declarations, with the help of every sophisticated and ultra-modern scientific equipment. They have gathered information about the circulation of energy and material in space. Astrophysicists are studying how the universe began. Did it all begin with a terrific explosion, the "big-bang"? With the aid of the radio telescopy, the scientists in Effelsberg can pick up signals that were sent 15,000 million years ago-when the "big-bang" is believed to have taken place. From these signals and what is now going on in space, it is possible to look back to the beginning of evolution, as if through a window in time: one can reconstruct the "big-bang".

Dr. Schmid-Burgk describes what is supposed to have taken place: "The cosmic material was originally densely packed and very hot. Because of the high temperatures, the atoms had been broken down into nuclei and electrons; even earlier, the nuclei of the atoms had been reduced to their elements, the protons and neutrons. During the hottest moments, the first few fractions of microseconds of the "big-bang', not even individual protons and neutrons could exist, but only what they are made up of, the quarks." The signals from space, however, also tell how the universe cooled down, expanded, how stars were born and died. With the passage of billions and billions of years, the time lapse has resulted slowly but surely in the loss of heat, the cooling down of planets which were all a part of the "Fire ball" once.

The moon was also at one time a part of the earth, and of course being but a smaller body, it has lost almost all its heat. The sun, which was the nucleus of the primitive rotating nebula, still retains a great deal of its heat, but it is not so intense as it must have been in the beginning. However, a time will come when the sun will cool down to darkness and no more be a fountain of light and heat to its planets, when there will be perfect darkness and intense cold-in fact, when this present cycle will come to an end. Long, long before that time arrives, this our earth will become a desolate wilderness- lifeless, silent and obscure. Seas, rivers, lakes, and oceans will be congealed to ice, even the very air will be a mass of solid. That time, according to Aryan calculation, is 2,333,227,018 years distant.

Modern scientific findings have reaffirmed the statement of this Vedic declaration.

- ***Satyakam Vidyalankar***

संस्कारों का अन्तिम संस्कार

–प्रो. शाम लाल कौशल

> संस्कार तो आखिर संस्कार ही है। आखिर हमारे पूर्वज बेवकूफ तो नहीं थे कि जो हमारे लिए अच्छे संस्कार छोड़ गए। आदमी की पहचान उसके संस्कारों से होती है। बिना अच्छे संस्कारों के आदमी पशु के समान है। अगर देश में सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रम, आपसी भाईचारा, प्रेम–प्यार, सुख–शान्ति आदि बनाये रखनी है तो अच्छे संस्कारों का होना आवश्यक है। दया, धर्म, परहित, संतोष, प्रेम प्यार, मीठे वचन, ममता, सरलता, देशभक्ति माता–पिता तथा बड़ों के प्रति श्रद्धा–सम्मान, माँ–बाप, भाई–बहिन तथा अन्य संबंधियों तथा मित्रों के प्रति कर्तव्य परायणता ही हमारे संस्कारों का आधार होना चाहिए। हर आदमी को अपना धर्म पालन करते हुए ईमानदारी तथा परिश्रम से काम कर, किसी को दुःख तथा पीड़ा नहीं पहुँचाकर हक–हलाल का सात्विक भोजन करना चाहिए तथा विचार तथा व्यवहार शुद्ध रखने चाहिए। सभी बातों के बावजूद माँ–बाप बड़े बुजुर्गों, शिक्षकों, धार्मिक गुरुओं तथा समाज सुधारकों का यह परम धर्म है कि खुद भी अच्छी बातों पर अमल करें तथा इनका प्रचार तथा प्रसार भी करें।

भारत ऋषि मुनियों, पीर, पैगम्बरों का देश है। यहाँ प्रस्फुटित ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा रामायण, गीता, गुरु ग्रन्थ साहिब आदि सहस्रों वर्षों से मानवता का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करते रहे हैं। भारत को अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा परम्परा पर नाज रहा है। हमारे यहाँ सभी धर्मों, जातियों, समुदायों तथा प्रदेशों द्वारा सभी तीज त्यौहार मिल जुलकर हर्षोल्लास के साथ मनाने की परम्परा रही है। हमारे यहाँ पराये धन को मिट्टी, परायी स्त्री को माँ, बहन या बेटी की तरह समझने की अनूठी परम्परा रही है। बड़े छोटे का लिहाज करना आम बात मानी जाती रही है। हमारे यहाँ हमसाया या पड़ोसी सगे भाई से भी बढ़कर माननीय तथा विश्वासपात्र समझा जाता है जो हर सुख दुःख में काम आता है। हमारे यहाँ ऐसे संस्कार दिए जाते हैं कि पिता की आज्ञा का पालन करते हुए श्री रामचन्द्र जी जैसा बेटा राजसिंहासन को ठोकर मारकर वनवास चला जाये, अन्धे माँ बाप को बैंगी में बिठाकर श्रवण कुमार जैसा बेटा तीर्थ यात्रा कराने चला जाये, सती सावित्री पत्नी ऐसी कि मृत पति सत्यवान को जीवित कराने के लिए यमराज के साथ भिड़ जाये। हमारी परमात्मा से प्रार्थना ऐसी है कि– 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।' संतोष, संयम, समर्पण, विश्वास, परहित, दया, धर्म, सत्कर्म, अहिंसा, मोक्ष आदि हमारे संस्कारों का अभिन्न अंग रहे हैं जिसकी वजह से भारत विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है।

लेकिन आज के बदले हुए हालात देखकर विश्वास नहीं होता कि यह वही भारत है जिस पर जन्म लेने के लिए देवता लोग भी तरसते थे। सत्यवादी हरिश्चन्द्र के देश में लोग झूठ, पाखण्ड, धोखा, फरेब, मक्कारी का सहारा लेकर हर काम में अपनी नैया पार कर लेना चाहते हैं। भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में शामिल होकर लोग भ्रष्ट तथा अनैतिक तरीके अपनाकर धन कमाने के लिए दिन का चैन तथा रातों की नींद बरबाद कर रहे हैं। आज हर भारतवासी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहंकार की लपेट में आया हुआ है। मांस, मछली, मद्यपान, परस्त्रीगमन एक आम बात हो गई है। गेरुए वस्त्रधारी आज के संन्यासी लोगों को लाख चौरासी के चक्र से बचाने के बदले में खुद ही ढोंग, पाखण्ड, ऐशपरस्ती, व्यसनों आदि के चक्रव्यूह में फँसे हुए हैं। शासक या राजा का प्रजा–पालन तथा प्रजा की रक्षा करना परम धर्म होता है लेकिन आज के शासक द्रौपदी रूपी प्रजा का खुद ही चीर हरण कर रहे हैं। अपने परिवार के लिए सभी हथकण्डे अपना कर धन सम्पति इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। आज संस्कारों का ऐसा अंतिम संस्कार हो रहा है कि पति–पत्नी का आपस में पहले जैसा प्रेम–प्यार, मेल–जोल, आपसी विश्वास, त्याग देखने को भी नहीं मिलता। महिलाओं के साथ मारपीट, बलात्कार, अपहरण आदि आम बात हो गई हैं। स्त्रियों में पहले जैसी लाज, शर्म, मान–मर्यादा, ममता, नारीत्व वाली बातें देखने को नहीं मिलती। कन्या भ्रूणहत्या भी करके जब लोग पुत्र प्राप्त करते हैं और वही बेटे अपने बूढ़े माँ–बाप की सेवा तो दूर उनका तिरस्कार, अपमान तथा अवहेलना करते हैं। कई बार तो पीटकर घर से बाहर निकाल देते हैं। लगता है कि जैसे संस्कारों का अंतिम संस्कार ही हो गया है। आज स्वार्थ, अहंकार तथा लालच के वश में होकर भाई–भाई का, मित्र–मित्र का, पड़ोसी–पड़ोसी के खून का प्यासा बना हुआ है तथा उनके कर्म में बिल्कुल प्रेम, सम्मान और अपनेपन का भाव नहीं है। किसी को लोक परलोक की कोई चिन्ता नहीं। कोई किसी का नहीं। सभी को अपनी–अपनी पड़ी है। घोर कलियुग है। सभी को एक दूसरे के मन में खोट दिखाई देता है।

लेकिन यह सब तो मानवता को पतन की तरफ ले जाने वाला है। संस्कार तो आखिर संस्कार ही है। आखिर हमारे पूर्वज बेवकूफ तो नहीं थे कि जो हमारे लिए अच्छे संस्कार छोड़ गए। आदमी की पहचान उसके संस्कारों से होती है। बिना अच्छे संस्कारों के आदमी पशु के समान है। अगर देश में सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रम, आपसी भाईचारा, प्रेम–प्यार, सुख–शान्ति आदि बनाये रखनी है तो अच्छे संस्कारों का होना आवश्यक है। दया, धर्म, परहित, संतोष, प्रेम प्यार, मीठे वचन, ममता, सरलता, देशभक्ति माता–पिता तथा बड़ों के प्रति श्रद्धा–सम्मान, माँ–बाप, भाई–बहिन तथा अन्य संबंधियों तथा मित्रों के प्रति कर्तव्य परायणता ही हमारे संस्कारों का आधार होना चाहिए। हर आदमी को अपना धर्म पालन करते हुए ईमानदारी तथा परिश्रम से काम कर, किसी को दुःख तथा पीड़ा नहीं पहुँचाकर हक–हलाल का सात्विक भोजन करना चाहिए तथा विचार तथा व्यवहार शुद्ध रखने चाहिए। सभी बातों के बावजूद माँ–बाप बड़े बुजुर्गों, शिक्षकों, धार्मिक गुरुओं तथा समाज सुधारकों का यह परम धर्म है कि खुद भी अच्छी बातों पर अमल करें तथा इनका प्रचार तथा प्रसार भी करें।

– मकान नं. ६७५–बी/२०, राजीव निवास,
शक्तिनगर, ग्रीन रोड, रोहतक १२४००१
साभार– सत्यार्थ सौरभ

।। ओ३म्।।

आर्य पर्वो की सूची

विक्रमी सम्वत् 2076–77 तदनुसार सन् 2020 ई.

क्र.सं.	पर्व नाम	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
1.	मकर संक्रान्ति	माघ बदी-5	2076	15-01-2020	बुधवार
2.	वसन्त पंचमी	माघ सुदी-5	2076	30-01-2020	गुरुवार
3.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-8	2076	16-02-2020	रविवार
4.	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-10	2076	18-02-2020	मंगलवार
5.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)	फाल्गुन बदी-13	2076	21-02-2020	शुक्रवार
6.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-3	2076	26-02-2020	बुधवार
7.	मिलन पर्व/नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-15	2076	09-03-2020	सोमवार
		चैत्र बदी-1		10-03-2020	मंगलवार
8.	आर्यसमाज स्थापना दिवस (नव-सम्वत्सर)	चैत्र सुदी-1	2077	25-03-2020	बुधवार
9.	रामनवमी	चैत्र सुदी-9	2077	02-04-2020	गुरुवार
10.	वैशाखी	वैशाख बदी-6	2077	13-04-2020	सोमवार
11.	हरि तृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण सुदी-3	2077	23-07-2020	गुरुवार
12.	वेद प्रचार श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन)	श्रावण सुदी-15	2077	03-08-2020	सोमवार
13.	सप्ताह श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-8	2077	12-08-2020	बुधवार
14.	विजयदशमी/दशहरा	आश्विन सुदी-10	2077	25-10-2020	रविवार
15.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन सुदी-12	2077	28-10-2020	बुधवार
16.	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-15	2077	14-11-2020	शनिवार
17.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष सुदी-9	2077	23-12-2020	बुधवार

विशेष टिप्पणी : 1. आर्यसमाजें एवं आर्य जन इन पर्वो को उत्साहपूर्वक मनाएं।
2. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, (निकट रामलीला मैदान), नई दिल्ली-2,
दूरभाष : 23274771, 23260985

प्रवेश सूचना – सत्र–2020–2021

छठी कक्षा में (आयु +9 से –11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/– रुपये) भरकर 31 मार्च, 2020 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 5 अप्रैल, 2020 दिन रविवार को प्रातः 8 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

ekgu yky dkyMk] eluitj
egkRek lR;kuUn eqatky vk;Z dU;k
xq#dqy 'kkL=h uxj yqf/k;kuk
nqjHkk"k %& 9814629410

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 5 का शेष

राष्ट्ररक्षा एवं महिला उत्थान सम्मेलन का आयोजन

कार्य युद्ध स्तर पर प्रारम्भ कर दें। उन्होंने बताया कि गोरक्षा महाअभियान का प्रारम्भ 12 से 18 फरवरी, 2020 तक हरियाणा प्रान्त में विशेष जन–जागरण यात्रा निकालकर किया जायेगा। उन्होंने अपील की कि हजारों की संख्या में इस जन–जागरण यात्रा में आप सम्मिलित हों और गाय को बचाने के लिए अपना योगदान अर्पित करें।

हरियाणा के पूर्व मंत्री व आर्य समाज हिसार के प्रधान चौ. हरिसिंह सैनी ने कहा कि देश की आजादी में आर्य समाज का सबसे बड़ा योगदान रहा है। लेकिन आजादी के वर्षों बाद आज भी शहीदों के सपनों का भारत नही बन पाया। उन्होंने कहा कि जिस दिन देश से कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, अश्लीलता आदि की बीमारी हट जाएगी उस दिन शहीदों के सपने भी पूरे होंगे। उन्होंने कहा कि हिसार से ही गोरक्षा महा अभियान का शुभारम्भ होगा और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के निर्देशन और संरक्षण में पूरे हरियाणा प्रान्त तथा सम्पूर्ण राष्ट्र में गोरक्षा के लिए अलख जगाई जायेगी। उन्होंने कहा कि यह बड़े लज्जा की बात है कि देश में निर्ममता के साथ लाखों गऊँएं काट दी जाती हैं और उनका माँस विदेशों में निर्यात करने के मामले में आज भारत पहले नम्बर पर आ गया है। उन्होंने कहा कि हम सबको गऊ को बचाने के लिए संकल्पबद्ध होकर इस महा अभियान में बढ़–चढ़कर भाग लेना चाहिए।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि बेटियां नारे बदलने से नही बल्कि मानसिकता बदलने से बचेंगी। आज उनके प्रति मानसिकता बदलने की जरूरत है। देश में बहनों के सम्मान से भारत का स्वाभिमान बढ़ेगा। हिसार से आई प्रसिद्ध भजनोपदेशिका कल्याणी आर्या व रामनिवास आर्य पानीपत ने क्रांतिकारियों के जीवन से जुड़ी घटनाएं सुनाई तथा देश भक्ति गीत प्रस्तुत किये। जिससे पूरा वातारण भक्तिमय हो गया।

इस कार्यक्रम में विशेष अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। 51 आर्य समाज के संगठनकर्ता युवाओं को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का मंच संचालन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने किया। संयोजन श्री दलबीर आर्य प्रधान जिला आर्य युवक परिषद् हिसार व श्री रविन्द्र आर्य ने किया। इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन एवं व्यवस्था में श्री दलवीर सिंह आर्य तथा श्री रविन्द्र आर्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही इनके अतिरिक्त श्री देवेंद्र सैनी उपमंत्री आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री महेंद्र सिंह आर्य मंत्री जिला आर्य युवक परिषद् हिसार, श्री सत्य प्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष आर्य युवक परिषद् हिसार, श्री रमेश आर्य जिला प्रवक्ता, श्री कृष्ण कुमार आर्य रावलवास, श्री अशोक आर्य खटकड़, श्री अजीत पाल खटकड़, श्री प्रदीप जी प्रदेश प्रवक्ता, श्री जयवीर सोनी उपप्रधान जिला आर्य युवक परिषद् हिसार आदि ने विशेष सहयोग किया। कार्यक्रम में युवाओं द्वारा योग प्रदर्शन भी किया गया।

इस सम्मेलन में अनेक प्रतिष्ठित एवं गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया जिनमें सर्वश्री स्वामी चेतनानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास, बजरंग लाल आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज हिसार, रामकुमार आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल हिसार, राम प्रताप आर्य प्रधान आर्य समाज आर्यनगर, सीताराम आर्य प्रधान केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हिसार, नन्दराम सांगवान, युद्धवीर सिंह आर्य, महावीर सिंह सेवानिवृत्त तहसीलदार, सेठ ताराचन्द आर्य, शोभाचन्द्र मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल धीरणवास, परमजीत शास्त्री कन्या गुरुकुल डोभी, डॉ. अनूप सिंह, निहाल सिंह डांगी, मनीराम आर्य, प्राचार्य राजमल ढाका गुरुकुल धीरणवास, आचार्य देवदत्त शास्त्री, पं. कर्मवीर शास्त्री आर्य समाज हिसार आदि के नाम उल्लेखनीय है। श्री वजीर सिंह डांगी ने सभी के भोजन की अत्यन्त उत्तम व्यवस्था की।

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'
लेखक–स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ–455

'मनुस्मृति'
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ–595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक से मंगाने पर एक प्रति के हिसाब से 25 रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।